Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

कविता

उषारानी राव

सत्ताएं संवाद नहीं करतीं

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

उषा रानी की कविताएं उत्कट प्रेम की कविताएं हैं। प्रेम देह के माध्यम से विश्वमयता में विसर्जित होता है। आलोक के रूप में परिणत दीखता है। प्रेम मन से छलक कर आत्मा के चशक में गिरता है यह महादिगंत को समर्पित होता है, वह उद्दामता पाठक में अद्‌भुत स्पंदन की तीव्रता से झंकृत कर देता है।

''अनंत विरह का कायांतरण था/ हो रहा काल, दिक् और देह से बाहर/ खिड़की से झांक रहा था/ चांद जैसे नाद में बिंदु का विलय।''

प्रेम शास्वत है। सृष्टि का मूल है। आनंद का मूल है। संसार बाजार में प्रौद्योगिकी में, उत्पादन में, राजनीति में, छल-छद्‌म में धँसा जा रहा है, गिरा जा रहा है, मरा जा रहा है क्यों? इस प्रश्न पर जो ठहरता है वह स्थिर होकर काव्योल्लास में डूबकी मारता है और विचारसूर्य उदय पाकर जान पाता है कि हम सब प्रेम और आनंद की खोज में है जैसे रावण भी वस्तुतः राम की ही खोज में था यही एक निष्कर्ष कवि से देह से शुरू कर संविति की कविताएं करवाता है और कवि गला फाड़ फाड़कर संसार को कहता है तुम इधर उधर लड़ने-झगड़ने गिरने पड़ने वालों तुम सब जिसे ढूंढ रहे हो वह भावभूमि है। तभी तो कवयित्री निष्कर्षतः कहती है कि पूरे ब्रह्मांड की अनगिनत द्वंदात्मकताओं में 'तेज बिकने वाला सौदा है भ्रम।' (भूमिका से)

क्षमा कौल, प्रसिद्ध साहित्यकार

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

परम आदरणीय... परमप्रिय बड़ी बहन
क्षमा जी को सादर सप्रेम भेंट

भावित मन की अभिव्यक्ति
को उदारतापूर्वक स्वीकारने के लिए...
केवल समर्पित भाव के कुछ भी
नहीं है....

आपकी छोटी बहन

ऊषारानी राव

4.3.18

G.M. College of Education
Raipur, Bantalab
Jammu.
Acc No. 49768
Dated 27.12.2023

अग्निशेखर और क्षमा कौल
द्वारा यह
पुस्तक सप्रेम भेंट

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Gr

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

सत्ताएँ संवाद नहीं करतीं

(काव्य-संग्रह)

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

सत्ताएँ संवाद नहीं करतीं

(काव्य-संग्रह)

उषारानी राव

ज्योतिपर्व प्रकाशन
गाजियाबाद-201012

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

ISBN : 978-93-85213-51-9

© : लेखकाधीन

प्रकाशक : ज्योतिपर्व प्रकाशन
99, ज्ञान खंड-3, इंदिरापुरम,
गाजियाबाद-201012 (उत्तर प्रदेश)
मोबाइल : 09811721147

मूल्य : 249.00 रुपये
प्रथम संस्करण : 2018

शब्द संयोजन : प्रिंस कंप्यूटर्स, दिल्ली, 09868462356
मुद्रक : तरुण ऑफसेट
दिल्ली-110053

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

'दुर्दान्त समय में कविता'

विमर्शों के सच्चे और छद्‌म महाजाल में फंसे उलझे भावों को निर्बाध सांस लेते देखने की अनुभूति है उषा रानी राव की कविताओं में से होकर गुजरना। यह समय भाव के विरुद्ध है क्योंकि भाव मूल्य है और यह समय ऐसी दुर्दांतता का है कि राजनीतिक, बौद्धिक, तिकड़में भिड़ा कर सत्य को आवृत्त करना मनुष्य के वर्ग विशेष के लिए मनुष्यता का पाठ पढ़ना-पढ़ाना, लिखना-लिखाना चलन है। ऐसे में भावों की खिल्ली उड़ना तय है विशेषकर यह हालत स्त्री विमर्श के तय और संकुचित दृष्टिकोण से लिखी जाने वाली प्रायोजित काव्यता के विरुद्ध साफ स्पष्ट और गहरी बातों को उकरने वाला काव्य संग्रह है। बिना किसी फैशनात्मक शब्दजाल के कई बातें साफ-साफ करता है। कवि को अपनी चेतना में जो कुछ भी दिख रहा है, हो रहा है प्रस्फुटित और विघटित हो रहा है कवि द्वारा काव्य में अजस्त्र बह रहा है। मूलतः कवि वह प्रातिभ होता है जो अपने किंचितकर्तृत्व में निष्ठावान हो। आनंद अनुभूति के साथ मधुर-कटु दुख-सुख अंर्त-बर्हि द्वंदों का निर्द्वंद दृष्टा होता है और अपनी अद्‌भुत रासायनिकता के मेल से अशुभ को भी शुभ में परिणति की या तो प्रवल आकांक्षा तथा प्रार्थना करता है अथवा तो परिणत ही कर डालता है।

यह कवि के काव्यात्मक प्राबल्य का चमत्कार होता है। इस चमत्कार का प्रभूत दर्शन इन कविताओं में मिलता है। जहां गेयात्मकता काव्यात्मकता बिंबात्मकता विमर्शात्मकता जैसी हर चीज की उपस्थिति है।

विराट के विरुद्ध काव्य सृजन के चलन को तोड़ती काव्य धारा का यह नया उत्खनन है। अपने अंतरतम से उद्‌भूत भाव को बिंब की निरंतरता देने का अद्‌भुत कौशल है उषा रानी राव के पास "मौन एक विचार सूर्य बनकर/ स्मृति में तैर जाता है.../ जैसे किसी मृण्मूर्ति को अपने नेत्रो के/ बनने का इंतजार सा हो।"

सचमुच विचार का सूर्य जब किसी के अंर्त में उदित होता है और आदिम स्मृतियों पर प्रकाश गिरता है तब जड़ चौतन्य होता है, लघु निस्सीम।

मनुष्य की मूल द्वंदात्मकताएँ एक-सी है किंतु अपने अपने देश काल के

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

हिसाब से तथा अपनी अपनी चित्त-वृत्तियों के हिसाब से तथा अपने-अपने देखने और अनुभव करने के हिसाब से उसमें वैभिन्य आता है। कवि ऐसा प्रातिभ होता है कि वह अधिकांश के अंर्तघटनाओं का अचूक प्रतिनिधित्व कर सकता है।

आज के अधिकांश काव्यधर्मियों के साथ एक विचित्र-सी विडंबना जुड़ी है कि जो कवि होना चाहते हैं वह स्वयं से प्रश्न नहीं करते उन प्रश्नों को ओट रखते हैं। वह कविता में चालाकियाँ बरतते हैं या अधकचरे ज्ञान से शब्दों को बरतने की चालबाजियाँ करते हैं जिससे कविता में पुनरावृति आती हैं तथा सतहीपन भी। चैतन्य तो गायब ही रहता है दैनिक, दैहिक तापों को बड़ा प्रश्न बनाने की कलात्मकता भी गायब हो उठती है। उषा रानी की कविताएं उत्कट प्रेम की कविताएं हैं। प्रेम देह के माध्यम से विश्वमयता में विसर्जित होता है। आलोक के रूप में परिणत दीखता है। प्रेम मन से छलक कर आत्मा के चशक में गिरता है यह महादिगंत को समर्पित होता है, वह उद्दामता पाठक में अद्भुत स्पंदन की तीव्रता से झंकृत कर देता है।

''अनंत विरह का कायांतरण था/ हो रहा काल, दिक् और देह से बाहर/ खिड़की से झांक रहा था/ चांद जैसे नाद में बिंदु का विलय।''

प्रेम शास्वत है। सृष्टि का मूल है। आनंद का मूल है। संसार बाजार में प्रौद्योगिकी में, उत्पादन में, राजनीति में, छल-छद्म में धँसा जा रहा है, गिरा जा रहा है, मरा जा रहा है क्यों? इस प्रश्न पर जो ठहरता है वह स्थिर होकर काव्योल्लास में डूबकी मारता है और विचारसूर्य उदय पाकर जान पाता है कि हम सब प्रेम और आनंद की खोज में है जैसे रावण भी वस्तुतः राम की ही खोज में था यही एक निष्कर्ष कवि से देह से शुरू कर संविति की कविताएं करवाता है और कवि गला फाड़ फाड़कर संसार को कहता है तुम इधर उधर लड़ने-झगड़ने गिरने पड़ने वालों तुम सब जिसे ढूंढ रहे हो वह भावभूमि है। तभी तो कवयित्री निष्कर्षतः कहती है कि पूरे ब्रह्मांड की अनगिनत द्वंदात्मकताओं में 'तेज बिकने वाला सौदा है भ्रम।'

स्त्री से जुड़ी चिंताओं पर जब हम कविताओं में दृष्टि डालते हैं ऐसा स्पष्ट होता है कि कवयित्री की मनोभूमि भारतीय श्रेण्यं स्त्री की सुदृढ़ और गहन आस्था की परामर्श भूमि है। महा चौतन्य के दो आदिम बिंदु पुरुष और स्त्री के मौलिक संरचना तथा मौलिक कर्तव्यों, अधिकारों तथा सामर्थ्य पर गहन दृष्टि है और उसका गहरा बोध भी। इतिहास उसके भीतर सनातन या सातत्य के

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

रूप में विराजित है ना कि संसार में दो मूल सृजन बिंदुओं से उपजे संसार को विघटित कर नित्य का नकार तथा अनित्य का शाश्वतता-बोध ही।

आज जिस स्त्री को देखो वही स्त्रीवादी फैशन की नकारात्मकता तथा परिवार विघटनोन्मुख क्रांति का मूर्खतापूर्ण सतही शंखनाद करती मिलेंगी। स्त्री-विमर्श की लेखिकाओं को स्त्री को अपनी भारतीय पृष्ठभूमि में देखना समझना बहुत आवश्यक है। इस आवश्यकता की पूर्ति का बोध उषारानी राव को खूब है वहां प्रेम का सुमधुर संघट्ट है। बाजारोत्भूत विघटन और उच्छंखलता नहीं। इस दृष्टि से परम पठनीय कविताएं हैं ये। जहां से स्त्री विमर्श आया वहाँ "कोई इतिहास नहीं तो कोई भ्रम नहीं'' वाली बात चरितार्थ होती है।

किंतु गहराई और अपने देश काल से उपजाया स्त्री विमर्श सार्थक तथा विश्वास्य तभी होगा, जब उसके इतिहास और भ्रमों के प्रश्नों से बखूबी निपटा जाएगा। मन के विभिन्न विस्मयात्मक क्षण और घटनाओं की अप्रितम दृष्टा है कवि उषा रानी।

यह इनकी 'क्षणबोध'/'देखा है मैंने'/'उजास मन'/जैसी कविताओं में देखा जा सकता है। उषा रानी मन बुद्धि की अद्‌भुत सामंजस्य की रचियता है और दृष्टा है। गहन रूप से दर्शन में पैठी निरंतर प्रश्नों से जूझती एक सर्जक। इनका शब्द चयन इतना सहज और तत्सम उन्मुख है कि इनको भारतीयता का प्रतिनिधित्व देता है।

''देखा है मैंने/ अस्ति का उद्‌भासित होना/ सांकृत्यायन के लिए हिमालय/ और संस्कृत के लिए कालिदास का/ शक्तिस्रोत होना, देखा है मैंने।"

–क्षमा कौल

जानीपुर जम्मू

दिनांक : 26-11-2017

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

अनुक्रम

1. सत्ताएँ संवाद नहीं करतीं 13
2. मिथ्या 14
3. भावभूमि 15
4. भ्रम 16
5. व्यथा 17
6. परिहास 19
7. स्पर्श 21
8. आंधी 23
9. देखा है मैंने 24
10. उस पार-1 26
11. उस पार-2 28
12. उपकृत 30
13. आम जनता 31
14. दिशाहीनता 32
15. दौड़ 34
16. कहाँ हो तुम महामना 35
17. अंर्तविरोध 38
18. देहातीत 39
19. परायाधन 41
20. काँटा 42
21. अंधेरे का चरित्र 43
22. वार्तालाप 44

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

23. विकल्प 46
24. कभी ऐसा होता 48
25. बदलाव 49
26. क्षण बोध 51
27. एकाकी भाव 53
28. जैसे थामती है हवा 54
29. उजास मन 55
30. सोचते हो तुम 56
31. क्यों 57
32. मूलोच्छेदन-1 59
33. मतलबी अंदाज 60
34. वक्त का दौड़ लगाना 61
35. खासियत जनतंत्र की अजीब होती है 62
36. भावित मन 63
37. मूलोच्छेदन-2 65
38. वितरण भाव भरे-करे समृद्ध 66
39. दिखते हो तुम 67
40. गुप्त मानसिकता 69
41. माँ 70
42. अबूझ 72
43. कोलाहल 73
44. कैसे सपने उगा रहे हो तुम 75
45. द्युति 77
46. लाल छींटे 78
47. पिता कभी नही मरता 79
48. पशुबल 80
49. दर्प 81

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

50. नजर गुलाब पर 82
51. एक कोना 84
52. चाहत 85
53. अंतस की खोज है मन 87
54. समझ 88
55. आजादी ताक पर 89
56. परिदृश्य 91
57. भ्रांति 92
58. मजबूर 93
59. त्याज्या 94
60. अखाड़े में जूझते जनसेवक 96
61. लम्हा 97
62. आत्मकेंद्रित 98
63. अधीनस्थ 99
64. जुगनू-सीयादें 101
65. मानवीयता का ग्राफ 103
66. देह 104
67. अपनापन 105
68. किरदार 107
69. अग्निवीणा 109
70. अज्ञात खंड 110
71. श्रम की भेंट 112

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

सत्ताएँ संवाद नहीं करतीं

सत्ताएँ संवाद नहीं करती हैं-
कि...करतीं है संवाद...
सत्ताएँ...
दिखने को
कि...करती हैं
संवाद...
छिपातीं ओंट में अपने
ध्वंस और दमन का रागं!
सत्ताएँ संवाद नहीं करतीं
सहानुभूति...
संवेदनाओं के
खोटे सिक्कों से...
चलातीं है...
कारोबार...बजवाती तालियाँ...
जय जय कार!
सत्ताएँ संवाद नहीं करतीं...

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

मिथ्या

मौन एक विचार सूर्य
बनकर...
स्मृति में तैर जाता है...
जैसे...
किसी मृण्मूर्ति को
अपने नेत्रों के बनने का
इंतजार-सा हो...
सुबह की स्मृति में
रात का
बचा रहना...
कल्पना की लाठी के अंकुश से
यथार्थ का मुक्त होना है...
कविता की असंलग्न पंक्ति
मन में
घुसकर तितर-बितर
करती है
खो-गये प्रेम की
पीड़ा की तरह!
दरिया का समुद्र में विलय के
समान...
मन की गहराई में डूब जातें हैं
शब्द...
फेनिल हो कर गिर जाता है
मिथ्या-
संसारीपन!

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

भावभूमि

भावों के उन्मेष का
जो बीज तुमने रोपा था
मेरे भीतर
हर स्पंदन के साथ
शब्द, रस, गंध का
दिग्वलयहीन आकाश
जहाँ खो जाने में ही
आनंद है
मेरी कल्पना
मेरा मूक आदर्श एक
जीवन्त निश्वास है
हवा के साथ
जन्मता है हमारा
तुरीय प्रेम
अन्तहीन अनुपस्थिति में भी
टूटता नहीं क्रम
महाकाव्यों की संहिता में
या श्लोक में
तुम्हें उद्धृत करके
ह्दय में सतत् बनाती
रही उन्मुक्त छवि

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

भ्रम

सनसनाहट की आवाज
के साथ...
रोशनी बढ़ती गई
पंचलाइट की रेशमी थैली में!
और...सामने आती गई
अंधेरे की अस्मिता!
अनबूझे आयाम...
अज्ञान के...
अंधविश्वास के...
जात-पात के...
वर्ग- बोध के...
बत्ती के पास उड़ता कीड़ा
उसके साथ सटकर
झुलस गया था!
कहीं बद्धमौन था...
कहीं अवसाद भी!
पीढ़ियों एवं समय के
बीच घटित संघर्ष
प्रकाश के घेरे में चुप!
सवाल किया मेरे अंतस ने!
आदमी की शक्ति या कमजोरी मानें इसे?
भ्रम की सृष्टि कर रहें वो
जो बचा के दामन निकल
रहें हैं...
तेज बिकने वाला एक सौदा है
भ्रम!

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

व्यथा

त्वरित गति से...बहुत कुछ घटता चला गया...
रूप हीन है निष्ठा...
कोई स्वरुप नहीं...
कोई अर्थ नहीं...
वस्त्र वलय से आवरित
नेत्रों में अपने
क्षितिज का फैलाव
करते-करते
ओढ़ लिया
अंधापन गांधारी ने!
महासतीत्व के
सिंहासन पर बैठ
करने लगी अपने अहं की तुष्टि!
अदृश्य दीवारों में
स्वयं ही बंदी
ओढ़े हुए अंधत्व से विषवमन किया
अबोध सुयोधन में...
अकारण नहीं था यह!
विवाह के छल का प्रतिरोध
या...समर्पण पतिव्रता का
'युद्धं देहि' की कांक्षा बलवती हो उठी
प्रश्न था
सत्ता का...
अधिकार का...
अंततः...

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

टूटी जांघ...भग्न देह लिए
किया प्रश्न...
दुर्योधन ने
जन्म तो दिया तुमने...
रचा नहीं पांडवों-सा चरित्र!
निरुत्तर...संज्ञाहीन गांधारी
अभिमान भंग!

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

परिहास

मद्धिम उजाले में
जरा-जीर्ण पिता का चेहरा
उभरा...
स्वर गूँजा...
'स्त्रियाँ हीं संसार
में खातीं हैं धोखा!
बनतीं हैं शिकार
संवेदनहीनता की...'
उनकी भींगीं पलकें पृथ्वी को
धुँधला करने लगीं...
घरेलु जद्दोजहद में
होम करतीं
अपने युवा दिनों को...
पीछे छोड़ आतीं...
भाई-बहन, सखी-सहेली...
तालाब...नाव...
बगान के फूलों...
और...झूलों कों
स्वतंत्र ईकाई का अहसास...
तक नही!
सुरंग के भीतर के जैसा...
एक जीवन...
मारपीट, बलात्कार...
जला दिया जाना...
फँदे की विवशता...

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

कर ले चाहे कितना
ही जतन!
ढलने लगी है साँझ चुप-चाप
एक टुकड़ा मेघ ने
चाँद को ढक रखा है...
हा...हा दारुण परिहास
फैल जाता!

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

स्पर्श

खिल रही थी एक एक कली
भूले बिसरे से मन की
चमक थी
भीग रही अकुलाई आँखों में
मिलन की वेला वो...
और
कौन तुम?
अभी भी अबूझ...
दोनों थे
महक-महक रहे बाहुपाश में
गुंथे हुए और जैसे लीन
अधर अधरों पर
जैसे धरती पर आकाश उतर आया था...
यह रूप लेती हुई
अजर इच्छाबरसों की...
नहीं, शायद जन्मांतरों की...
अमृत था नयनों में
झर रहा...
उद्दाम थीं लहरें
मुखरित मौन था...
सुगंधित गुलाब सा पल
अचंभित....
चमक थी, कौंध थी, स्पर्श था
शब्दातीत, अलौकिक
अभेद समाकूल

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

अनंत विरह का कायान्तरण था हो रहा...
काल, दिक् और देह से बाहर
खिड़की से झाँक रहा था चाँद
जैसे नाद में बिंदु का विलय हमारा...

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

आंधी

निस्वर आँखों में झाँकती
पीली दुपहरी...
दूर-दूर तक
कोई नहीं
दरवाजों पर...
दस्तक की
गूँज आज भी है...
एक काली आँधी ने...
पीछा किया
जो न हवा, न मिट्टी, न राख से
आकृत है...
किसी प्रेत की तरह...
परकाया...
प्रवेश करती है
इंसानी समाज
औ सभ्यता की
संवेदना को रेगिस्तान के
रेत...
की तरह सोख लेती है
यह घायल हिरनी की
करुण आँखों-सी
न मरी न जीवित!
अकेली बैठी कहाँ...
रो रही है!

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

देखा है मैंने

श्वेत, शुभ्र बादलों का
समूह
अनेक आकृतियाँ
बनाता है...
विलीन
हो जाता है
देखा है मैंने...
शिल्पी को
जो
अहंकार शिला की
परत-दर-परत
उतार देता है
नई आकृति अभिन्न
हो जाती है
देखा है मैंने...
गगनचुंबी
देवदारू को...
जड़शक्ति के आकर्षण
को पराभूत कर
अर्थातीत
आनंद को पाता है
देखा है मैंने...
'अस्ति' का
उद्भासित होना...
सांकृत्यायन के लिए

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

हिमालय
औ संस्कृत के लिए
कालिदास का
शक्ति-स्त्रोत होना...
देखा है मैंने...
हिमखण्डों को
अखंड...
जो पिघलते नहीं,
ऐसे हिम हैं...
हम
स्याह पड़ा हिमालय
बाहर नही
भीतर है...
देखा है मैंने...

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

उस पार-1

दूर..अनंत जलराशि के उस...पार...परदेश में...
...और ज्यादा पैसा होगा...
सुविधाओं से
संपन्न जीवन
खाने-पहनने की
कोई कमी नही...
खुशनुमा तस्वीरें...उजागर होने लगतीं...
गाँव की छाती पर
खड़े...
कई नये
मकान...
परदेस से कमाये गये पैसों से...
वह जो परदेस से
लौट रहा होता
है...अपनों की झलक
के लिए
गाँव की जमीन पर पाँव रखते
ही...
बाबुल के घर-सा अहसास से
भर उठता है...
यहाँ त्योहार में गाँव का गाँव
हुलस जाता...
गाँव-डगर में उड़ती धूल
नाच-गाने में बजते ढोल...
धान के खेत की महक...

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

कितना...मनभावन!
जाने कैसे?...सोचा होगा
परदेस में बसने का...
अभी भी गरीब की
मिट्टी सूखी है...
सपने नम हैं...यहाँ...
बाजारी तिलस्म में लूटेरे
हैं...पहरेदार!
सत्ता की...
नीतियों का अंदाज
है...हमलावर...
लौटें तो क्या होगा हासिल?
दो दिशाओं में खुलते हैं दरवाजे
हमेशा...
जितना अंदर जाने के लिए...
उतना बाहर आने के
लिए...

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh. Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

उस पार-2

तस्वीरें आयीं हैं
पोते-पोतियों की
सुबह की डाक से
साल छः महीने में
पहुँच ही जाती हैं!
पर...
वे नहीं आते
मन कातर हो उठा...
दरवाजे को अधखुला कर
खड़ी रही...
सड़क के उस पार से आ रही
थी...
हरसिंगार की महक!
धूल,धूआँ सबको दबाकर
दूर से...
तस्वीरों की तरह उस पार से...
तस्वीर न होगा तो न होगा
ह्दय!
आगाह किया खुद को उसने...
श्इतनी सहूलियत भरी
जिंदगी
जी रहें हैं वे!
क्या करेंगे यहाँ आकर...?
पराजित कर देते शब्द
अंदर ही अंदर

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

क्या यह सच नही...?
भौतिक ललक ने...
स्वार्थी बहक ने
कर दिया
सांझें चूल्हे को दूर...
आज का सच
खालीपने में
लिपटा...
तकता है
वर्तमान का दूर होते जाना!

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

उपकृत

गोधूलि के आकाश में...अपने आप उठते...
रंगों की तरह
उसके
चेहरे पर रंगत...निखर आती...
ऊसर भूमि-सा नीरस मन का कोई कोना स्पंदित होने लगता
केवल सतही भाव से
नहीं थी अनुगत!
प्रेम को अनंत रातों में भरना चाहा था...
जो सोई हुई स्तब्ध सरिता की अंर्तगुहा में
हिलकोरे उठा जाये!
संग का माधुर्य एक-एक पल को बनाता स्वप्निल...
अनूठे अंतरंगता से
उपकृत होने पर
उपकार चुकाने के लिए क्या रह गया था शेष...?

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

आम जनता

खिड़की से आती
मद्धिम रौशनी
आम जनता की
झर-झर
पसीने की टिमटिमाती
लौ है
यहाँ संघर्ष
एक जिजीविषा
की चेतना है
भूत के कंधे पर
भविष्य का
झाँकना है!
सपनों की हकीकत
बदराई साझँ
लगती है
एक सभ्य अत्याचार
गढ़कर कुचक्र
कुलाँचे भरती है
रसोई की आँच में पीड़ा, प्रताड़ना के
सुलगते आक्रोश
बनें हथियार
सबसे पहले मोर्चे पर
यहीं होते हैं तैयार .....

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

दिशाहीनता

किसी बहते हवा के प्रतिकूल...
किसी सत्य की बुनियाद पर ठहर कर...
शिव धनुष का टूटना
महज
शौर्यशाली घटना नही थी
टूटी थीं...
पीढ़ियों की अहमन्यताएँ
शस्त्रीकरण का दंभ
क्षीण होते संकल्प
गहरे होते परिताप
और...
चिन्हित करना था कृषि-कर्म
के संघर्ष को!
मिट्टी में निहित उर्वराशक्ति
हरियाली चादर ओढ़ा देतीं
खेतों को
बालक-सा कृषक इस उपहार
से घर आंगन भर लेता
श्रम बिंदुओं से मुखर हो
खेत-खलिहान हो जाते
अक्षयपात्र!
जहाँ सौंदर्य वहाँ डर भी!
शस्त्रीकरण में बदलने लगा काल
मलीन हुआ चेतना का ताल
एक नई आंधी...

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

ले आयी...
श्रमयज्ञ से पलायन की दहलीज पर
दिशाहीन सोच
राजनीति की बलिवेदी पर!
बची रह गई अब...
उदासीनता
शोषण
बेगारी
भूमिहीनता
आत्महत्याएँ
कृषक संस्कृति का अंतिम संस्कार!

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

दौड़

रोज-रोज की
यह दौड़
छूटे नहीं कोई
मोड़
कांक्षा की यह
होड़
तोड़ न दे मन-जोड़!
पल-पल का
हिसाब
लायें कहाँ से
जनाब?
मुनीम का नहीं
यह खाता
हिसाब हो जाये मनभाता...
मस्ती की यह
बस्ती है
आँसू बहती
सस्ती है
बैर-प्यार की कुश्ती है
भाव भरा मन भिश्ती है

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

कहाँ हो तुम महामना

निनादित था, अध्यात्म
आत्मा के पोर पोर में,
संचित थी मेधा, दर्शन के
छोर छोर में...
संस्कार थे सात्विक उस
युग महापुरूष के....
बौद्धिक और आत्मिक
विकास हेतू मनुष्य के
निर्माता बने महामना
ज्ञान तीर्थ का
काशी बनी राजधानी
सर्व-विद्या का
पुनर्जीवित हो उठा
नालंदा, तक्षशिला!
कौन रोक सकता था
अभियान को भला!
शक्ति थी महामना की
संगम की माटी
तप अक्षय कोष था
काशी की घाटी
महामना की यशोकाया
सतत उदीप्त है
जिसके कण-कण में
ज्ञान जीवंत है
शिक्षा का मंदिर धुधंला गया

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

विकारों से
अंग्रेजियत के
मोह ने जकड़ लिया
विचारों से
'सत्यं वद', 'धर्मं चर' से
तोड़ लिया नाता
चक्रवात है, फैशन राह
भटकी क्या पाता?
तिनके-सा बेबस
त्रिशंकु-सा जीवन
मानवीय मूल्यों का
घोर पतन, घोर पतन...
मन के कोने से मुखरित
स्वर गम्भीर...
व्यामोह से मुक्ति,
तम छोड़े शरीर
फिर प्रखर मेधा
चिर-वरण्या होगी...
फिर आस्था शुभ कर्मो की
संवाहिका होगी
मूल्यों के विघटन का
प्रेत शाश्वत नही!
भीतर छिपे ज्ञान को
करोगे जाग्रत नही?
जलाओ बुझी हुई
ज्ञान की वर्तिका को
आत्म त्याग को
सत्य साहस को
देखो पुरुरवा को!
ज्ञान ऋषि महामना

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

कहाँ हो तुम? तप
की मियाद पूरी नही
आ जाओ तुम!
सूना है पथ अब
मार्ग दर्शन का...
परकाया प्रवेश करो
मानव जीवन का।
दो आर्शिवाद
आत्मा प्रकाशमान हो
मन उर्जावान हो
अनुभूतियाँ हों क्षीर सागर
मनुज मूल्यवान हो
सबके अर्न्तमन में जाग्रत
यहीं रहो, यहीं रहो
तुम महामना
सनातन
सभ्यता एवं संस्कृति को
कर साकार जना
कहाँ हो तुम महामना?

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

अंर्तविरोध

भादों की
चिलचिलाती धूप में
कांक्रीट
गिराते मजदूर के बेलचे अचानक ठिठक गए!
मिक्सर का शोर
थम गया...
मधुमक्खियों के छत्ते पर पत्थर
लग जाने से
बन गई थीं बावरी!
यह बेकाबू उड़ान
पत्थर के पीछे...या षड्यंत्रकर्ता के!
बात समझना न था
आसान!
घात... सदा ऐसी ही
होती है
हम होते रहे हैं पैदा
बहलाते रहे हैं खुद को
इन्हीं कृत्रिम...सँकरी
आत्मघाती
गलियों में!
कभी मार्क्स आगे...तो
कभी बुद्ध पीछे
अंतर्विरोध का सिलसिला थमता नहीं...
विषम की थाप पर सम की ताल ...
जूझते रहने को विवश करता
सवाल!

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

देहातीत

कोई छवि नही...
शब्दों...
प्रतीकों...
विचारों से
मुक्त
ऐसा पुष्प... जिसमें सुंगध है...
चाहे तो सूँघें
या
पास से...
गुजर जायँ...
एक ऐसा प्रवाह...एक
ऐसी गति...
जिसमें अस्तित्व नही
काया की...
त्वरित संवेदना से ओतप्रोत!
जो एक-एक पल मुक्त हो...
जो स्वंतत्र हो
भूत-भविष्य से परे...
स्मरण या विस्मरण की चिंता
नहीं...
चित्ताकाश पर पल्लवित होता है...
प्रेम...
उजली धूप में चमकतीं पत्तियाँ सदृश
परन्तु आज...
मुझे अपने ईश्वर से, अपने देश से, वस्तु से, तुमसे प्रेम है...

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

कितने लबादों से लदा है यह...
किसी ढर्रे में कैद...
यंत्रवत व्यवहार का
पर्याय नजर आता है... आज
...प्रेम

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

परायाधन

वह...
माँजती है जूठे बर्तन घरों में
साफ करती है अनाज
पीसती है मसाला...
धूएँ से भरा
बचपन है
एक स्कूल है सपने में...
विरासत में संघर्ष लगातार
रचे-बसे श्रमपूर्ण आस्था के
साथ
खड़ी है बेटी...
एक उजास-सा सपना
आँखों में
झूल रहा है...
बोली-बाबा मुझे यहीं रहना है
ताउम्र...
स्वार्थ रहित ममत्व
आँखों
के पोरों से छलक आई...
बोला-बेटी
तू तो है परायाधन!

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh. Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

काँटा

डूब गई उसकी छवि
आँखों के व्यंग्य में...
कमजोर नही थी...वह
बनाई गई थी...
संसार की कपटता का
उतार-चढ़ाव...
हिसाबी लोगों का
जोड़ घटाव...
थोपे गये अधिकार ने
सोख लिया
उसके सपनों से खून...
स्पार्टाकस के सीने में धधकती
आग की तरह...
दृढ़ता के ताप को
जीती है...वह...
मन के कोने में मेघ मंद्र गंभीर
स्वर उर्ध्व है...
...इस कँटीली फाँस से स्वंय
को मुक्त करना है पहले...
उछाल दिया उसने दुख को
शून्य में कंकड़ की तरह!

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

अंधेरे का चरित्र

प्रकाश की उजली
परिधि के भीतर
खड़े होने पर पहचान पाते हैं अंधेरे के चरित्र को
यह ढोंग...
यह फरेब...
यह मक्कारी...
जिदगी यही है शायद .आज!
कितनी तेजी होती है इस भीड़ की चाल में
एक अजीब तरह के भय से
प्रेरित तेजी...
एक उत्तेजना...
वह कुरूपता...
जहां उसे आत्मा को
दूषित करने का
मिलता है अवसर!
नाच...रंग...
आमोद-प्रमोद....
मिट जाता है
एक बुलबुले उठाकर
छलावा है तुम्हारी ऊंचाई!
जड़ कर देने वाला

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

वार्तालाप

सुनहरें आसमानी कैनवास में
बैंगनी रंगत लिए...
गहरा रहा था धुंधलका...
विचित्र शांति के साथ
गहन होती गई
हमारे वार्तालाप की कड़ी...
यद्यपि हमने आँखों से
देखा नहीं पहले...
आत्मा से संपन्न होता है
दर्शन!
पर्वत के अनंत विस्तार में
चंद्र की दीप्त आभा...
शब्द
बन कर उतर रही थी...
पूरी भव्यता के साथ!
उन्मत्त कर दिया
प्रेम ने ह्दय को...
अब बाँधा नही जा सकता
इसे!
पेड़ पर से गुजरती हवा...
घास की वह कोमल पत्ती
सब में...
दिखने लगा अंतरतम रुप!
मैंने बुझाई अपनी प्यास
इसीशाश्वत सौंदर्य के स्त्रोत पर...

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

अब कुछ न रहा पहले जैसा...
अकल्पनीय उर्जा...
एक विराट आकाश...
सिवा निस्सिमता के बोध...
और...कुछ नही!
अंतर्वार्तालाप में खोते गये
शब्द...

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

विकल्प

जब कर्तव्य और कर्ता
भूल जाते हैं संकल्प
जब रोग, शोक, पाप,
ताप का बढ़े कल्प
तब क्या हो विकल्प!
जब अनावृष्टि से नष्ट हो
किसानों का श्रम यज्ञ
जब दम तोड़ती प्रजा
श्वास के सीमान्त पर बेबस अज्ञ
तब क्या हो विकल्प!
जब दुर्योधन की कुमति
शकुनि से परामर्श ले सर्वत्र
जब सत्ता के डेरों पर
होने लगे गिरवी
न्याय पवित्र
तब क्या हो विकल्प!
जब वर्ग-संघर्ष बन जाये
सत्ता-संघर्ष
जब बेच जायें निष्ठाएँ
अपने पथ-प्रदर्शक
तब क्या हो विकल्प!
जब गंगा वैतरणी हो जाये,
शुद्ध-अशुद्ध का फ़र्क न पायें
जब अपने कर्म की गठरी
औरों के सिर लादी जाये

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

तब क्या हो विकल्प!
जब प्रेम दिखावा
औ छलावा हो जाये
जब कामदेव भी
कुटिल लास्य पर मिट जाये
तब क्या हो विकल्प!

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE 2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

कभी ऐसा होता

अंधेरे में आवृत्त आकाश
पर जैसे...
एक मद्धिम रोशनी डूब जाती
है लहराकर
वैसे ही...
रंग, ध्वनियाँ, पेड़, चेहरे
मिट रहे हैं सपनों में खो कर...
अपनी बनाई दुनिया के वृत्त में...
आर्थिक मनुष्य में बदलता
आधुनिक मनुष्य!
आत्मकेंद्रित भाव...
संवेदनशून्यता...
औपचारिक भंगिमा...
रिक्त करता संबंधों में उष्मा!
कभी ऐसा होता...
बंजर होते जनजीवन की भावभूमि में
भक्क-से जीवन की लय
जगा देती
सचेत आत्मा!

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

बदलाव

नींद से जागी कदमों की
लय ताल...
अविवेक से अपमानित
अपराध पर
वाक-जाल...
जन-जन की झपकती
आँखों में सपनों की
जंग...
महकतें फूल, उड़ती
तितलियों
के रंग बेरंग...
मिट्टी के पुतले में
हर पीड़ा की
गहराई...
राजनीति की चकाचौंध में
जनतंत्र की
परछाई...
फ्यूजन और चेहरा समाजवाद का!
डगमगाते वर्तमान में
प्रश्न
आतंकवाद का!
कमोडिटी उन्मुख
सोच
भटकाव की मुहिम है...
मोहक,

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh. Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

मायाजाल में फँसी यह
बाजारवादी
तालीम है...
लपलपाती महत्वाकांक्षा
लील जाती है
संवेदना...
पता ही नही चलता कब
लगे बनावटी
हँसी-हँसना...

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

क्षण बोध

हवा के झोंके ने
अचानक ही आकर
किसी
आकर्षण केंद्र में
आत्मसमर्पण
कर दिया
यह कृति अब
मेरे अंकुश से
निकल कर
पातक के पाले में!
आदमी क्या खो गया है?
मानवीयता पर
पदार्थ हावी
हो गया है
ऊँचाई जितनी ऊँची,
उतने गहरे
धँसा रहता है डर!
कहीं पोटली में बँधी
शोहरत का सच
न खुल जाये
कहीं भ्रष्टाचार का पंक
मैला न कर जाये
तुम्हारे बंदी प्रतिबिंब में
आर्त हाहाकार
भर गया है

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

इस जीत जाने वाली घुड़दौड़ में
खो जाते हैं
उत्कर्ष के स्वर
न जाने कब, कहाँ, कैसे
कवलित होते हैं
जीवन के प्रहर

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

एकाकी भाव

आँधी में काँपते समूचे
वृक्ष की हलचल में
कठिन है...ढूंढ़ना
निश्चल पत्ते को!
दृष्टि सहज ही आकर्षित होती है गति की ओर!
चेतना में
टकराहट अनौचित्य...
एक कहता है...
प्रगति करनी है तो
छोड़ो परंपरा को...
दूसरा...
परंपराधीन हो तो
त्यागो...
नयेपन...
नवाधिकार को...
जड़भाव हैं दोनों यदि हैं...एकाकी!

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh. Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

जैसे थामती है हवा

सफेद बादलों की
कतार में...
नीले सागर के
गर्भ में...
पतझड़ के पत्तों के
मर्मर में...
चेतन के अचेतन में...
थामते हैं तुम्हारे हाथ
मुझे
जैसे थामती है
हवा फूलों को!
तुम्हारा...
आलोकमय स्पर्श
जीवित रखते हैं
मुझे
अनंत तक!

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

उजास मन

सफेद उजास मन
गोता लगाती है सपनों के
तलैया में
जो सीमा प्रतीत होती है
वह सीमा कहाँ...
क्षितिज आभासित होता है
क्षितिज कहाँ...
दृष्टिपथ में मानों भूलभूलैया...
चारों ओर
कोई अंतरीप नहीं...
एक कोरी-सी इच्छा
प्रतीति दूसरे की
अनुभूतियाँ बनें
कोई ऐसा रास्ता जो...
माथे की नीली धारियों को
मोटी करने से
रोक सके
जो बम के वर्धित डर को
बुलबुले
की तरह फोड़ सकें
वर्चस्व का मानक बने
लौह-शस्त्र को
नकार सकें!
बुद्ध की अहिंसा में
हिंसा को
तिरोहित कर सकें

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

सोचते हो तुम

सोचते हो तुम सिर्फ सोचते हो
काई भरे फिसलन से
खुद को बचाना है
अस्तित्व को झुठला
देने वाली
निर्धनता के घाव
भरना है
सोचते हो तुम सिर्फ सोचते हो
तमाम अबूझ निष्कर्षों के
पिटारे को फेंकना है
संदेह और झूठ के
भ्रम से दूर रहना है
सोचते हो तुम सिर्फ सोचते हो...
पृथ्वी भयभीत होती
जा रही है
भद्र व्यक्ति निर्भय
चल-फिर सके
ऐसे शान्ति विश्वास को
पैदा करना है
सोचते हो तुम सिर्फ सोचते हो
मरीचिका के रँगीन वैभव में
उल्टी दिशा के पथिक
बनने से खुद को
रोकना है
सोचते हो तुम सिर्फ सोचते हो

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

क्यों

दुनियाभर की नफरतों ने
मिल कर झूठ के परिदृश्य में
अपने अस्तित्व को टटोला
कूट-कूट कर भर दिया
मृत्यु की सार्थकता का
ध्रुव दर्शन
सभ्यता का हर कवच
जर्जर हुआ हत्या, लूट, घर्षण से
मानव मर्मर हुआ
क्यों?
अंधे रास्ते पर
चलती रही मानवीय भीड़
और
ईर्ष्या,
द्वेष
लोभ से
छिन गया है नीड़
जननी जन्मभूमिश्च
बन गई है
एक यथार्थ
अर्थहीन परिकल्पना
सच को सीने में दफनाए
चुपचाप अनीति के साथ रहना

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh. Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

क्यों...?
अमानवीय कोलाहल के
काँटों से छिदता आत्म सत्य
न्याय के अभाव की भयावह
बाढ़ में दम घुटता धैर्य
क्यों...?

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

मूलोच्छेदन-1

जैसे पेड़
जो जड़ से उखड़ जाते हैं
जैसे शरीर से...
निकलने पर आत्मा...
जैसे सूख जाती जल की धारा स्रोतहीन...
जैसे अन्धेरे में डूब जाती है पृथ्वी प्रकाशहीन...
ऐसे ही खदेड़ा उन्होंने
तुम्हें अपने बसेरों से...
तुम चीखते छटपटाते भटकते रहे
रात दिन...
अब विश्वास तुम्हें
चुभता है कटार की तरह...
घाव सा टीसता है भीतर
जाने कौन सा लम्हा था...
खून ने बुझाई थी
खून से प्यास...
उसी मे घुल गया था जहर
घृणा का...
लेकर बाहुपाश में अपने
कर गया रिक्त
मानवता को...
भटकते तो जानवर भी नहीं...
उनके भी होते हैं ठिकाने
और इस तरह
कर दिया जड़विहीन...
उठा दी दीवार बीच तुम्हारे इस तरह...

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

मतलबी अंदाज

हाल पूछा तो कहा मतलबी
अंदाज है...
मतलब-परस्ती का ये चरम विकास है
रंग ढंग अंग की चाहत ने...
न जीने दिया न मरने दिया
वक्त की धूल में उड़ता हुआ
अभी अभी गुजरा है...
लापरवाह...
लम्हा...
जरा पलट कर देखा...
इक उम्र गुजर गई...

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

वक्त का दौड़ लगाना

लम्हों के बाँट बनाकर
काल तराजु पर तौलती...
वक्त का यूँ दौड़ लगाना
कभी आना कभी जाना...
रिश्तों की हुकूमत अच्छी लगती
असल में पल पल छलती...
अपने-पराये की चौखट पर
मिलन-जुदाई की कश्मकश में...
जिरह करती है बावली, इश्क!
फैसले से भर आते हैं अश्क!

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

खासियत जनतंत्र की अजीब होती है

खासियत जनतंत्र की अजीब...
होती है
शहादत में...
जनता सलीब होती है...
कुशासन की
अनगिनत खाईयाँ
बेईमानी के पुलों से कहाँ पटती है...?
खासियत जनतंत्र की अजीब होती है
खुशहाली के एक आश्वासन पर
भर-भर वोट देती है
खासियत जनतंत्र की अजीब
होती है
ओहदों की लालिमा में
चरित्र की कालिमा नजर
आती है।
खासियत जनतंत्र अजीब
होती है।
पार्टी-तंत्र के नकाब में
जनतंत्र
की वेदना गमगीन होती है।
खासियत जनतंत्र की अजीब होती है...

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

भावित मन

निर्बाध उन्मुक्त जीवन
के दिन
कभी देह कभी अर्न्तमन
के क्षण
जीवन की सोंधी महक
से भरी
निश्छल प्रेम की छलकी
गगरी
आँखों में चाँद औ सूरज
की लौ
प्रतीक्षा, उत्कंठा का हर
पल बहे रौ
घास में हवा के
पदचिन्ह की आहट!
ओस बिंदू में समुद
की छटपटाहट!
सुगंध बना फूल का
असीम विस्तारण
अगन भीतर भर शृंगार
आभरण
तेरे विश्वास के मलय में
अंधकार को कर पार
असीम प्रेम बन हदय में
परिपूर्ण शृंगार
काया की काया, रुप का

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

अभिरुप
आँखों के अधीर विस्मय में
खिलती सुनहरी धूप
स्मृति में विस्मृति में
फर्ज, खिलते-पलते
सब तुम्हारे अनंत साम्राज्य
में समाते

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

मूलोच्छेदन –2

खदेड़े गये इस तरह
जिन्दगी की त्रास ले तरसते
भटकते रहे...
चलती रही जुल्म की चाकी
रात दिन...
रिसने लगा मवाद
धर्मान्ध का
सभी नैसर्गिक रंगों से विहीन
बने हम
देश का महज रेखाचित्र भर...
सुलग रही है हममें
अगरबत्तियाँ सी...
महका दिया बचपन को
जला भी दिया...
वे बैठे हैं...
हाथ पर हाथ धरे...
उन्हें मालूम हो
कि हम राहों में हैं खड़े...
शक के किले में है
कातिल का इंतजार...
दर्द बेहिसाब...
मरहम कब, कैसे करें
ऐतबार...

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

वितरण भाव भरे-करे समृद्द

भोर का उजाला नव दिन की सृष्टि
परिवर्तन नही बदली केवल दृष्टि
र्निलिप्त प्रकृति सुखद सम्प्रेषित
लिप्त मनुज के हाथों उद्वेलित
फिर भी सर्वस्व समर्पण भाव
यही सौम्य प्रकृति का प्रस्ताव
सृजित प्राणी प्रकृति एक समान
स्वंय सचालित या चालित महान
वितरण भाव भरे-करे समृद्द
कृत्रिम भाव हरे ज्ञान प्रबुद्ध

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

दिखते हो तुम

आँखें बंद करने पर...
दिखते हो तुम...केवल
तुम!
मेरी हर स्पंदन से जुड़ कर...
ले...चलते हो
मुझे...मुक्त सीमांत तक
जहाँ प्रणय प्रकाशित है!
चलने का विभोर आनंद
सारी विषमताओं की
दीवार फाँदकर...
अज्ञात के भीतर खींचकर
ले जाता है...
अजस्त्र स्रोत है वहाँ...
मेरी कविताओं के शब्दों का
अर्थों का, भावों का...
एक उजला सपना...
एक अकाल में दरकी
मिट्टी...
एक बाढ़ में उजड़ी
फसल...
एक विद्रोही का स्वर...
एक निर्दोष की मौत...
पहाड़ से लेकर बिंदू
तक...
रखते हैं आच्छन्न मुझे!

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh. Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

तुम जिसे अभेद कहते हो
वही मेरा जीवंत निःश्वास है
जीवन के बोध के लिए...
मृत्यु का बोध...
और...
मृत्यु के बोध के लिए
निविड़...
अंतरंगता के साथ प्रेम!

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

गुप्त मानसिकता

मित्रता...
गुप्त मानसिकता का नाम नही...
मुहँ पर प्रशन्सा...
पीछे वैर-भाव का काम नही...
कृष्ण और अर्जुन की मिसाल मिलती है मगर...
आज चरित्र की कहानी का वह भाव नही...

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

माँ

सृष्टि का स्वंय स्वरूप
सृजित करे शरीर रुप
प्रवाहित रक्त का
एक-एक कण
सिन्चित करे ममत्व भर मन
स्वर, रस, स्पर्श का
संचार जिससे
सृष्टि करती है
संवाद उससे
घास के पत्ते पर
ओस की बूँद सा जीवन
सावधानी से सहेजे
यह मातृ मन
माँ केवल नही
व्यक्तित्व
स्वयं विसर्जित
अस्तित्व
सृजन आनंद है
दुख नही
माँ की अवमानना में
सुख नही
दो रुप हैं
वह जीवन भी
और मृत्यु भी!
एक स्त्रोत की तरह

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

दूसरा अंत की तरह
सृजन और संहार
एक ही सिक्के के
दो पहलु!!!
समझो इस शक्ति को
अमृत-विष अमरक्ति को

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

अबूझ

अबूझ है यह प्रकृति,
प्रशंसा और आलोचना से
पिघलना
उबलना
खीझना
या चुप हो जाना
या खपाना खुद को
समझाने में सच!
यह कैसी
दिल्लगी है?
ओढ़ी हुई चुप्पी
या
प्रायोजित शोर में...?

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

कोलाहल

कूटनीति के कोलाहल की
कर्णभेदी धमक
राजनीति की वीथिका पर
भयानक
विभ्रम!
मति विपर्यय...
अराजकता... सर्वत्र!
आकाश की उल्का के
समान होती है उदित
अमंगल की आशंका!
कुछ लोग करते हैं संघर्ष
अधिकार के लिए
और कुछ...
लेते हैं प्रतिशोध...
मिथ्या स्वाभिमान के लिए!
छल का केंद्र रचती हैं
एक चक्रव्यूह...
शस्त्रों की होड़ के बीच!
विपत्ति
जितनी भयानक
नीति

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

उतनी ही आक्रामक!
विद्रोही तलवार में बदलता
असंतोष जन का
भटका...मानदण्ड शासन का

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

कैसे सपने उगा रहे हो तुम...?

कोठरी में व्याप्त धुँए की गंध
विचित्र रुप से साँसों को बोझिल
किये दे रही थी
कदमों को वहीं रोक लिया...
खोज रहीं थीं आँखे व्यग्रता से
पता नही कहाँ भटक गया था...निश्चेत-सा 'विवेक'
सपने देखने की लत लग गई थी
उसे...
सपनों में खोने का रहस्यमयी आकर्षण...
हर रोज नशे में डूबना पड़ता सपने देखने के लिए
निर्झर जल में बढ़ता ही जाता उफान
चमकीले नारों में बदलते आसमान
को देख...
धुएँ में सपनों को जीने लगा
उतार कर रख दिया था अलग!
जन्मने का मधुरालाप...
मृत्यु की धुनें...
विचारवाद का पोथा...
शोषण का घेरा...
और भी बहुत कुछ...
कोने में औंधा पड़ा मिला

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

झिंझोड़ा उसे...मैंने
'कैसे सपने उगा रहे हो तुम'...?
'बहुत भारी होती है आजादी की गठरी'
निर्वासित भाव से बोला

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

द्युति

चंदन से सुंगधित पवन सदृश
अर्णव का सृजन...
सर्वस्व...
सर्वत्र...
निज में समाया
थोड़ा आदिम...थोड़ा उदात्त
आत्मा को देह समेत
समय से
परे ले जाता...
एक अतंरग बिंदू!
मन के अंर्तभाग पर
आच्छादित
अरुणाभ प्रेम की
प्रतिबिंबित धवल द्युति
तुम्हारी!

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh Funding by IKS-MoE 2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

लाल छींटें

दौड़ती हुई जीवनधारा
में
सपनों के नक्शे पर
लहू के लाल छींटों को
देखो...
घातों-प्रतिघातों के दौर में...
केवल आदमी होना काफी नहीं है!
एक चिंगारी
धधक रही है भीतर... नैतिकता रखी है...ऊपर
ताक पर!
है तुम्हें! नफरत कुछ से...
कुछ से है निद्रोंन्मिलित
प्रेम!
पुत जाती है...
कालिख भीतरी चेतना में
तो...
आदमियों के साथ मरने लगते हैं...देवता भी!

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

पिता कभी नहीं मरता!

पिता कभी नहीं मरता!
बिना थके...बिना थमे
पर्दे के पीछे रहकर
काम करनेवाला अदम्य
गुरुत्व बल!
जो जीवन की धूप,
बरसात से करता हो बचाव
ऐसा मचान...
किनारे की रेत देखकर
बच्चों के खिलन्दड़ेपन को
अपने अंदर...उतार लेता हो
दुख के तमाम धागों के
बीच जो मौजूद
होता हो...
हिम्मत व हौंसलों की
लाठी के साथ
भटकते...बहकते गली से
निकाललाता हो...
दौड़ती दिनचर्या के बीच
अवरोधों से गुजरकर
जीवनाविष्कार करते हुए
पिता कभी नहीं मरता!

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

पशुबल

अहिंसा के बंधनों को
तोड़ती...
सांप्रदायिक भँवर में चक्कर खाती...
देश की नौका!
वाह रे...मार्तांडों!
पशुबल हावी है तुम्हारे वैचारिक बल पर
एक कष्ट साध्य रोग है कट्टरता...
जो रोग और रोगी
दोनों का कर देती है अंत!
मनमाने मतवाद से दूर...
जागृत सामाजिक
भावावेश की है...
प्रतीक्षा...

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

दर्प

कौंध जाता है आँखों में
अंधकूप-सा
आकाश...
बिका हुआ है विलास के
हाथों चरित्र!
जो बिक जाये बाजार में
वह संवेदन शून्य...
कालसर्प के विष की भाँति
फैलता जाता है...छद्म दर्प
रिक्त होते भावबोध...
इन्द्रासन की लालसा में!
राजनीति है शक्ति
शक्ति की पूजा करती रही
है...प्रजा
जहाँ हो अंधकार का
प्रभाव
होता है वहाँ प्रकाश का
अभाव!

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh. Funding by IKS-MoE 2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

नजर गुलाब पर!

समाज की श्रमपूर्ण
साधनाओं की परिपाटी
बसी है...
कृषक संस्कृति में...
हर बार नई आशा की
किरण लेकर लौटती है
धानी रंग की बेल!
लाखों कृषकों के सपने
बिखरे पड़े हैं
मिट्टी में...
मिट्टी का रंग बदल रहा है!
शस्य श्यामला दबती जा रही है
ऊंची इमारतों में!
दूर तक फैली है साकार उदासी...
गुलाब हमारी आंखों में
ऐसा बसा है कि...
गेहूं को देखकर भी...
नहीं देख पाते
जरूरी है...
गेहूं की वेदना का हल!
आदमी सिर्फ चारा खाने वाला
जानवर नहीं...
आखिर गुलाब की खेती तो

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

करते हम ही हैं!
रखनी होगी नजर गुलाब पर
किंतु...सम्भव है...?

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

एक कोना

न जाने कैसे...
प्रविष्ट हुए तुम!
मंत्रमुग्ध-सी
देखती रह गई मैं
छोड़ दिया...
एक कोना आसन का!
तुम बैठ गए
बढ़ने लगा तुम्हारा...अधिकार
पूर्णतः आसीन हो
गए हो अब!
निरखने...
परखने...लगी हूँ प्रतिक्षण...
निरे काठ हो तुम!
नदियों की तरह बहने
वर्षा की तरह बरसने
पुष्पों की तरह बिखरने
अन्न के कणों की तरह
उगलने वाली...
आत्मवेदना कभी देखी है...तुमने...?

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

चाहत

बिंदास चेहरा, बोलती
आँखे
स्लिम, ट्रिम देह
कॉलेज से
निकली...वह...
मॉडलिंग के
रास्ते
फिल्मों में जाने की
चाहत...
एक तिलस्मी दुनिया में
तैरने लगती...
कुछ ही दिनों में
रैम्प पर
कदमताल...
हर प्रॉडक्ट के
साथ
वह भी लांच होती
पछाड़ खातीं लहरें
जैसे तूफान का संकेत
देतीं हैं...
वैसे ही मोबाइल की
घंटियाँ
औ अपार्टमेंट की कॉलबेल
बजने लगतीं
महानगरीय खुलापन

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh. Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

लिव-इन-रिलेशन के
उन्मुक्त पल!
लैपटॉप, हैंडीकैम
विदेश भ्रमण
सब उसके
आगोश में...
ज्यादा उम्र नहीं होती
चकाचौंध से
भरी दुनिया की!
फिसलन के फँदे में
फँसती जाती
चढ़ने की
बेसब्री...
खिड़की के पास की
बालकनी में खड़ी
सोच रही है
क्या सपनों को पंख
देना...पिंजरे से बाहर
आना नही ?
फिर क्यों काटूँ पंखों को?
वह व्यंग्य से मुस्कुरा उठी

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

अंतस की खोज है मन

चेतना की
अशांति है मन...
जैसे लहरों में
अशांत सागर...
नहीं होतीं लहरें भी गहराई में!
हवा जितनी तेज लहरें भी
उतनी ही...
वहाँ चली आती है...
बेचौन आराजकता!
रहती सदा सतह पर
हवा हैं...या कि विचार?
कोई सत्ता नही मन की अपनी!
केवल सतह पर संघर्ष...
बाहरी वस्तु के साथ
भीतर बढ़ना ही केंद्र तक
पहुँचना है!
अंतस की खोज है मन का
अतिक्रमण...
अंतस का रुपांतरण...
विपर्यय का अंत...
अज्ञान का लोप!
बुद्ध हो जाना...

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh. Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

समझ

अजीब -सा शोर है
सफर में...
मन का निनाद है
प्रहर में...
कुछ खुशियाँ, कुछ उदासियाँ
कुछ कहकहे
जज़्बात के...
आहट-सी करीब आकर
धूमिल होते...
अहसास आस-पास के
अंधेरे में भटकती है आज
सच की शख्सियत
भूखे में सवाल है...
रोटी की काबिलियत
मगर तुम हो कि बने हो
अर्थ अज्ञात!
पहन सीमाओं को स्वंय से
दूर
सँकरी झील की
मानिंद
अपने ही वजूद से
टकराते हो...
समझ न पाये जिस लय को
उसे ही आजमाते हो...

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

आजादी ताक पर

मिले थे...
तुम हमें लहूलुहान...
अनगिनत प्रश्न आँखें थीं वीरान
चीथड़ों में...
लिपटे हुए हाल बेहाल
भूखे थे सदियों से बने हुए कंगाल
निचोड़ कर छोड़ दिया था ऐसे...
बन गये थे तुम एक कंकाल
तुम्हें गले लगा कर...
सारे जहाँ की खुशियाँ पाकर
भूल गये वह वेदना...
जिसका किया था...
सामना...
पाने की कीमत चुकाई थी सबने.
एक भी साया न बचा करोड़ों के अपने...
ऐ प्यारे देश तुम्हारी रिहाई ने
खुशी अकूत दी!
आजाद आक्सीजन ने पैर जमाने की हिम्मत दी
तुम्हें पाकर लगा बाकी नहीं बचा कुछ!
आज भी वर्षों बाद क्या यही बचा है सच!
बस! किरदार बदल गये
वही...
लूट-खसोट, घृणा औ मारकाट जारी है...
अंग-भंग के प्रत्यक्ष तांडव में अब 'इनकी' भागीदारी है
बँट रहा परिवार,समाज,

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE 2025 Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

देश बँटने के कगार पर...
शामिल हैं नेता, नीतियाँ और दलों की जनता
षडयन्त्र के इस चाल पर...
आज भी...
तुममें खोज रहे हैं तुम्हारा स्वरूप
जो धुँधला पड़ता जा रहा
आधुनिकता के काल खण्ड में...
जकड़ अमानव के स्वार्थी पंजों की झुन्ड में...

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

परिदृश्य

जान लेना नही!
जी लेना
ज्ञान है
चलने का मकसद
ठहरना नही!
पहुँचना है...
नये सूत्रों के अर्थ तलाशती
जीवन की अनुभूतियाँ
धुंध से उभरतीं श्वेत-श्याम
छवियाँ
बाजारवादी संक्रमण के अंधड़ में
भटकता चरित्र
विवेकहीन परिदृश्य में फैलता
व्यक्तिवाद सर्वत्र...
पर्सनालिटी आज मिजाज
बदल रही है...
स्वंय में सिकुड़ने की
प्रवृत्ति पनप रही है...

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

भ्रांति

चेतना के किस छोर पर
मिलते हैं ये
भाव!
संवेदना आलाप बन
कर
सम्मोहित कर ले!
कोई इतिहास नही
तो
कोई भ्रांति भी नहीं
जीवन एवं मृत्यु में
स्वप्न एवं जाग्रति का
विभ्रम!

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

मजबूर

स्वाधीनता के
अंतर्निहित खोल में
हिंसा का क्रम
बनाते हैं समय के
निशान
इसकी पृष्ठभूमि
धूल, धूआँ, राख
बने
पुरूषार्थ की जमीं
मानवीय दृढ़ता कातर औ
कमजोर
गोदान का होरी
आज भी
उतना ही मजबूर

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh Funding by IKS-MoE 2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

त्याज्या

'अलग ढूंढ़ लो अपने लिए अम्मा!
अब घर हुआ मेरा
भरें हैं गिरवी के रुपये मैंने'
चौंकी वह
बेटे की आवाज सुनकर
बर्फ का गोला-सा
सिर से पाँव तक गुजर गया...
मन के अगोचर कोने में खड़ी वह
लाज से भरी
विवस्त्र होने से भी अधिक
असहाय दशा में
ठंडी पड़ चुकी आवाज में
बोली-जाऊँ कहाँ मैं?
शरीर के एक हिस्से से
गूंद, माड़ कर गढ़ा है मैंने तुमको
कब और क्यों तुमने
उँगली छोड़नी चाही
नही जानती...
कितना सुखद है.
देवकी होना...
यशोदा होना...

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

कितना दुस्तर है
त्याज्या माँ कहलाना!
क्या अंत नही ममत्व का?
निर्वासन में...
अपमान में...
तुम्हारे अस्वीकार में!
निर्मम है सच...

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

अखाड़े में जूझते जनसेवक

प्रखर सूर्य के आलोक में बनती हैं...काली...छायाएँ भी!
संकट...
शोषण...
शून्यबोधता...
बची रहती है...एक आस...
अपने पौरुष की
बैसाखी से
उल्टे हाथ से भी बिखेरेगा
बीज...
तब भी...लहरायेगी हरी-भरी फसल!
पर...
विकारों की
आरी चीर कर
विलग कर देती है
सद्भाव!
अखाड़े में जूझते
जनसेवक!
धराशायी करते प्रतिद्वंदी को
छल से...जिह्वा बल से!
उनकी दौड़ का छोर...
केवल...सुखासन तक!
यही है राजनीति की
सिद्धांत कौमुदी!

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

लम्हा

हाल पूछा तो कहा...
मतलबी अंदाज है...
मतलब-परस्ती का
ये चरम विकास है
रंग, ढंग, अंग की चाहत ने...
न जीने दिया न मरने दिया
वक्त की धूल में उड़ता हुआ
अभी अभी गुजरा है...
लापरवाह...लम्हा...
जरा पलट कर देखा...
इक उम्र गुजर गई...

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

आत्मकेंद्रित

स्वंय में आकंठ डूबे समाज में...
नौकरशाह...
राजनेता...
पूँजीपति...के बीच
गहरा है गठजोड़!
जीतने की सिकंदरी इच्छा
बार-बार दोहन के धार को
करती है दुगुना इनमें...
घातक कुचक्र से
दारुण स्थिति के गवाह
बनते जा रहे हैं हम
दुर्दशा...करती है
आहत...मर्माहत...
भर देती है गहरे विषाद से...
पर...
निराला के शोकगीत-सा अपराध-बोध नही!
अंततः आसन हम ही देते हैं...
इन्हे!
जनपक्षधरता...
केवल कलम तक!

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

अधीनस्थ

तरंगे भरती पतंग आसमान में
टटोलने लगती
अगल-बगल का संसार...
संजीदगी से संभल-संभल कर
फेंकती एक बारीक नजर...
खलनायक पर!
जिसकी धूर्त मुस्कान
झाँकती
सफेद बादलों से...
भाँप कर हमलावर अंदाज
तल्ख हो जाता मन...
लगता...
जिसके पैरों तले दबी हो गर्दन
उनको सहलाना ही अच्छा!
अब आधुनिक लोकतंत्र में
भी वही सब...सामंती अतीत
जैसा...?
द्वंद में उलझती जाती डोर
अधिनस्थ स्थिति का ज्ञान है
उसे!
पर...अचेतन के चेतन में

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

कौंधता एक वाक्य...
होने वाली है अंत
खलपूर्ण कृत्यों की!
ठीक वैसे ही जैसे लिखा होता है...
पैकेट पर
एक्सपायरी डेट!

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

जुगनू-सी यादें

भीनी-भीनी सुगंध-सी...
स्मृतियाँ...
बचपनकी...
जीवन के शहद से भरी...
कल्पनाएँ...
नंगे पाँव चलने की...
उत्कटता...
सीमाएँ...
शंकाएँ...
प्रकृति के सौंदर्य-सा
निर्मल मन...
धीरे-धीरे उभरता...
गुदगुदाता...
अबूझ...
अपरिभाषित...दर्पण!
बढ़ाता स्पदंन...
रेत के घरौंदे-सा...
रुमानी सपनें...
गाँव के खेत...
आँगन का कुआं...
मिट्टी की पगडंडियाँ...
बेखौफ! जीवन के थपेड़ों से...
प्रेम-प्रसंगों की डींग हाँकना...
समय को अपने ही
अर्थों में टटोलना...

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

बस!
जुगनू-से लम्हें
जुगनू-सी यादें!
एक रहस्यमयी दुनिया...
आकर्षण की...
स्मृतियाँ बचपन की!

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

मानवीयता का ग्राफ

अध-खिली पंखुड़ियों-सी
पीढ़ी
जिसमें प्रतिरोध की
ज्वालामुखी
धधकती है
भयावह भाव-स्खलन!
यह आत्मा की भीतरी
उपज नहीं है
अजीब-सा अविश्वास फैल
गया है...
कागजों के जंगल में फँसी
तरुणाई
तनावों औ दबावों की गहरी स्याही
एक बीहड़ राह जो दूसरे बीहड़
में खुलती है...
इनके स्वर ऊँचे होते
जायेंगे
गिराये गये बम की तरह
दृश्य-अदृश्य खतरे
बढ़ते जायेंगे
मानवीयता के ग्राफ में अनवरत गिरावट
उपहास नहीं!
घोर निराशा में आक्रोश
सन्निहित!

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

देह

अविराम बहती हुई चेतना
की धारा...
अनथक
देखती है आते-जाते वर्तमान को
संकोच की सीमा में
टूटता जुड़ता घूंघट से
एक चेहरा झाँका-कौन?
'पहचाना मुझे'?
ओह! तुम
तल्खी भी..अपनेपन वाला अंदाज भी!
अंतराल के किसी कोने में स्मृति
की शिला पिघलने लगी...
लाज में लाल पड़े पल में
मीठी थाप देते शब्द...
'तुम्हारे साथ का हर लम्हा हसीन
होता है'
यहीं से शुरु हुआ था भावों का अद्भुत खेल!
नाजुक सपनों-सा
ठीक से पहचानते-पहचानते
वह गायब!
समझाया लोगों ने 'यह रास्ता अंधा है'
झुक गई...
सीने की मिट्टी को धँसा दिया...
बन गई देवी!
क्या देह काफी है? जीवन-साथ के लिए!
अंर्तमन का क्या?

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

अपनापन

अपने पन की मन्मय
दिशा में
दिग्दिगंत तक
तुम ही तुम
मंत्रमुग्ध स्वप्नों से
पूरित
सुगंधित शब्द कुसुमों से
बिंबित
अधीर हुआ जब मन
सुखमय सपने चुन
अंतर्मन के झरनों
का संगीत
सर्वसमर्पण की समाधि
में गुंजित
असंख्य विचार-संसार की
उड़ाने मापकर
आदर्शों की कथा-सागर में
गोते लगाकर
आंतरिक चाह को परिपूर्ण
करते असीम शब्द
क्या तेरे हृदय को ये

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

प्रेमभाव
करते हैं स्तब्ध?
वेदना सहज अनुभूति से
शान्त हो जाये
तुम और मैं के बीच हर
स्पंदन को
सच कर जायें।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

किरदार

सुना है...
रंगमंच है जिन्दगी...किरदार हैं हम!
किस्सा हो...
ख्वाब का...
मुहब्बत का...
हकीकत का...
आसान है ओढ़ना...
किरदार
अपने-अपने मतलब का...
सरल है पहनना
किसी मजहब का चोला
या... पंथ का झोला...
मुश्किल है
बनना...
नेकदिल और भोला... इन्सानियत का चेला
सुना है...
कठिन है इस दौर में
उतार फेंकना
मुखौटा झूठ का...
अपना लेना
चरित्र इंसानियत का!

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS,MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

पर...

गुजर जायेगा

यह दौर

रंग बदलने का

दे जायेगा तर्जुबा...कसैला...

जमाने भर का...

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

अग्निवीणा

निद्रा निमग्न हैं...
सचिव...गुरु...बैद...!
विकलांग सोच
किए हुए है दृष्टिहीन
यह जो मुंह फेर ली है...
देखकर अत्याचार...
तुमने!
नस-नस में भर रहा है
गहरा आक्रोश!
लाल आंखें तरेर कर
असत्य के प्रतिरोध को
लगे हो दफनाने में
तो...सुन लो!...
मेरे स्वर
अग्निवीणा के स्वर हैं!
ढह जाओगे
स्वर विस्फोट से!

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2020 Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

अज्ञात खंड

क्षितिज के नीचे उतर
रहा था
आग का गोला
प्रतिबिंबित होकर मुख
लालिमामय हो रहा था...
कितना शांत!
कितना गंभीर!
अज्ञात खंड से...आए
मिले...दोनों
हिमालय के शिखरों के बीच
लाखों तारों की
आभा में तकते हुए...
निर्निमेष...
होकर निर्द्वंद...
निशेष...
निशब्द...
निस्पृह...प्राप्त किया
एकत्व को
कौन-सा विधान था वह?...
ले आया निकट
दोनों को!

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

कोई आवरण नहीं
कोई अपेक्षा नहीं
चित्रलिखित-सी धारा में
बहते हुए धारा की
गति को
देखती रह गई!

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

श्रम की भेंट

समाज की स्लेट पर
लिखी है...
आज भी
असहायता और...विकल्पहीनता...
जो दोहराई जाती है
हरबार...
ताजपोशी के बाद...!
आसमान-चूमते नारों में...
धूल का काजल लगाये
बैठी प्रजा...
चुपचाप फासलों की आड़ से
तकती है...
श्रम की भेंट चढ़ाकर
भी व्यवस्था की
'मनचाही' जोत में
जुतने को
विवश...
एक ही सबक!
या...बदलो...
या...मिट जाओ!

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

श्वेत, शुभ्र बादलों का
समूह
अनेक आकृतियाँ
बनाता है...
विलीन
हो जाता है
देखा है मैंने...
शिल्पी को
जो
अहंकार शिला की
परत-दर-परत
उतार देता है
नई आकृति अभिन्न
हो जाती है
देखा है मैंने...
गगनचुंबी
देवदारू को...
जड़शक्ति के आकर्षण
को पराभूत कर
अर्थातीत
आनंद को पाता है
देखा है मैंने...
'अस्ति' का
उद्धभासित होना...
सांकृत्यायन के लिए

इसी संग्रह से कवितांश

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

उषारानी राव

जन्म : 15 दिसम्बर 1971

शिक्षाः एम.ए, बी.एड, बनारस हिंदू विश्वविद्यालय (वाराणसी) तथा पीएच.डी. बैंगलोर विश्वविद्यालय (बेंगलुरु)

मातृभाषा : कन्नड़

प्रकाशित पुस्तकें : भारत नेपाल काव्य सेतु-साझा काव्य संकलन(2017), 'लोक साहित्य एवं संस्कृति एक विमर्श' सह- संपादन (2017), दक्षिण भारत में हिंदी का महत्व - दक्षिण विशेषांक भाषा सहोदरी पत्रिका का संपादन(2017)

अंतर्राष्ट्रीय हिंदी साहित्य सम्मेलन में प्रस्तुत शोध पत्रों के पुस्तकों का संपादनः "हिंदी साहित्य में सामाजिक चुनौतियाँ (2016,) "विमर्श "(2016) "अहसास" - साझा काव्य संकलन(2016), राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलनों में चालीस से भी अधिक शोध पत्र प्रस्तुत एवं मुद्रित। महत्वपूर्ण पत्र-पत्रिकाओं में कविताएँ एवं आलोचनात्मक लेख निरन्तर प्रकाशित।

संप्रतिः बाल्डविन महिला महाविद्यालय, हिंदी विभाग, बेंगलुरु में विभागाध्यक्ष ।

संपर्क : 94, वनशंकरी, सेकेण्ड स्टेज, 30वां क्रास, बेंगलुरु -560070

ईमेलः drusharani25@gmail.com **फोनः** 09845532140

ISBN:978-93-82009-22-1
₹ 249

ज्योतिपर्व प्रकाशन
99, ज्ञान खंड–3, इंदिरापुरम, गाजियाबाद 201012

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant